प्रातःक्लास 7.4.68 ओमशान्ति ''वर्सा याद है?''

ओमशान्ति। भगवानुवाचः मीठे–2 शालीग्रामों वा रूहानी बच्चों प्रति। यह तो बच्चे ही समझते हैं हम सतयुगी आदि सनातन पवित्र देवी–देवता धर्म के थे। यह याद रखना है। हम थे फिर 84 जन्म लेते–2 अभी कलियुगी पतित भ्रष्टाचारी हिन्दु धर्म के बन गये हैं। कैसे बन गये हैं वह बताना चाहिए। भाषण करते हो तो टॉपिक्स रखते हो ना। यह पत्रे तो बाबा ने छपवाई है, यह टॉपिक्स की ही है। आदि सनातन देवी–देवता धर्म को तो बहुत ही मानते हैं ; परन्तु देवता धर्म के बदली हिन्दु नाम रख दिया है। अभी तुम तो जानते हो हम आदि सनातन कौन थे फिर पुनर्जन्म लेते'–2 अभी यह बने हैं। यह भगवान बैठ समझाते हैं। कोई देहधारी मनुष्य नहीं है। शिवबाबा को कहा ही जाता है विदेही। उनको अपनी देह नहीं है। और सभी आत्माओं को अपनी–2 देह है। एक शिवबाबा को देह नहीं है। तो अपन को ऐसे समझाना कितना मीठा लगता है। हम क्या थे, अभी क्या बन रहे हैं, यह ड्रामा कैसा बना हुआ है, यह भी अभी तुम ही समझते हो। यह देवी–देवता धर्म ही पवित्र गृहस्थ आश्रम था। अभी आश्रम नहीं कहेंगे। पवित्र गृहस्थ आश्रम नाम निकल गया है। आश्रम में सदैव पवित्र ही रहते हैं । कितना बड़ा शिवालय आश्रम था। वैश्यालय को आश्रम थोड़े ही कहेंगे। यह अक्षर भी अच्छी रीत धारण करनी है। बहुत हैं धारण फिर प्वाइन्ट भी सुनाते हैं; परन्तु मनुष्य बड़े ही पत्थर बुद्धि हैं। हम भी पत्थर बुद्धि थे। अभी बाप आकर समझाकर पारस बुद्धि बनाते हैं। देवी–देवता धर्म के बनाते हैं। तुम जानते हो हम आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। हिन्दु नाम तो अभी रखा है। आदि सनातन हिन्दु धर्म तो है नहीं। बाबा ने बहुत बार कहा है आदि सनातन धर्म वालों को पकड़ो। बोलो, इसमें लिखो आदि सनातन देवी–देवता धर्म के हो या अपवित्र हिन्दु धर्म के हो? तो उनको 84 जन्मों का मालूम पड़े ना। यह नॉलेज तो बड़ी ही सहज है। सिर्फ़ लाखों वर्ष कह देने से मनुष्य मूंझ पड़े हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनने का ड्रामा में पार्ट है। देवी–देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते–2 छी–2 बन गये हैं। भारत क्या बन गया है? पहले भारत कितना ऊँच था। भारत की बहुत महिमा करनी चाहिए। अभी फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान, पुरानी से नई दुनियां ज़रूर बननी है। आगे चल कर तुम्हारी(ी) बात को समझेंगे ज़रूर। बोलो, घोर नींद से जागो। बाप को याद करो और वर्सा लो। तुम बच्चों को तो सारा दिन बड़ी खुशी रहनी चाहिए। सारी दुनियां में ,सारे भारत में तुम्हारे जैसा पदमापदमभाग्यशाली स्टूडेन्ट कोई नहीं। समझते भी हो जो हम थे, वही फिर बनेंगे। छांट करके फिर वही निकलेंगे। इनमें तुम मूंझो मत। प्रदर्शनी में थोड़ा भी सुनकर जाते हैं तो वह भी प्रजा बनती जाती है; क्योंकि अविनाशी ज्ञान रत्नों का तो विनाश होता नहीं। दिन–प्रतिदिन तुम्हारी संस्था ज़ोर भरती जावेगी। फिर धीरे–2 मच्छरों सदृश्य तुम्हारे पास आवेंगे। आस्ते–2 धर्म की स्थापना होती जावेगी। कोई बड़ा आदमी बाहर से आता है तो उनको मुँह देखने लिए कितने ढेर के ढेर मनुष्य जाते हैं। यहां तो वह बात नहीं। अभी समझते हैं वह तो जैसे चर्ये, बन्दर, भूलरे, हिरण्यकश्यपः बिच्छू–टिण्डण हैं। रामायण में भी एक कथा है, बिल्कुल ठीक है। राम की सेना दिखाते हैं ना। भल सिकल मनुष्य की है; परन्तु सीरत क्या बतावें ? इसलिए बाप कहते हैं हियर नो ईविल, सी नो ईविल। इस दुनियां में यह जो भी दुनियां है यह सभी नहीं देखने की चीज़ें हैं। यह कचड़ा तो सभी भस्म हो जाना है। दिल में समझते हैं यह हम क्या देखते हैं। जो भी मनुष्य आदि देखते हैं यह सभी क्या है। बाहर वालों की बात की जाती है। तुम तो हो संगमयुगी ब्राह्मण। इस संगमयुग को और कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी बहुत जिनको याद भी नहीं रहता। यह संगमयुग है इतना भी सिर्फ़ याद करो तो सिद्ध हो कि सतयुग में जाने वाले हो। अभी संगम पर हैं। जाना है घर। पवित्र भी ज़रूर बनना है। अन्दर में समझते हैं यह तो जैसे सभी मेहतर हैं। भार खाते हैं। विकार में जाने वाले बड़े कसाई हैं। बड़े ही प्यार से कटारी चलाते एक/दो का खून करते हैं। छूड़ी चलाने में कितनी फरहत आती है विकारी मनुष्यों को। कटारी लगाने बिगर रह नहीं सकते। अभी बाप कहते हैं काम को जीतो। यह आदि, मध्य, अंत

दु:ख देती है। बाबा बहुत कड़े–2 अक्षर देते हैं। देवियों को भी कटारी, इतने भुजाएं क्यों देते हैं? जैसे रावण को भुजाएं दी हैं वैसे देवियों को भी दी हैं। तुमको तो इतनी भुजाएं हैं नहीं; परन्तु रावण सम्प्रदाय हैं ना; इसलिए भुजाएं भी दे दी हैं। रावण सम्प्रदायवासी ही उनकी पूजा करते हैं। देवियों की पूजा गोया रावण की पूजा। फिर इनसल्ट कितनी करते हैं। देवियों को सज़ा कर पूजा आदि कर फिर कहते हैं डूब जा। नहीं डूबती तो ऊपर चढ़कर भी डुबोते हैं। कितनी नॉनसेन्स बुद्धि, आसुरी बुद्धि हैं। कुछ भी समझ में नहीं आता। और ही लड़ने लग पड़ते हैं। देखा ना, हिरण्यकश्यप तुम्हारा माण्डवा उड़ाने लगा। अकासुर, बकासुर यह सभी नाम इस संगमयुग के ही हैं। तुम जानते हो उन्हों का भी पार्ट है ड्रामा में। विघ्न डालेंगे। विख के लिए कितना तंग करते हैं। कहते हैं बिख दो नहीं तो हम नीचे, टपा देते गोल्ली खा लेते हैं। अरे, बाप कहते हैं काम महाशत्रु है उनको जीतना है या उनके लिए अपघात करना है। ऐसे–2 कसाईयों से बचकर बच्चियां आती हैं। कितनी मुश्किलात होती है। कसाई तो मेल है, कसाईनियां फिमेल्स भी कोई–2 बड़ा तंग करती है। पूतनाएं आदि उस समय के हैं। अभी तुम बच्चों को कितनी समझानी मिलती है। कितने ढेर मनुष्य हैं दुनियां में। तुम एक–एक को कहां तक बैठ समझावेंगे? एक को समझाते हो दूसरा फिर उनको कहेंगे यह तो इन्हों का जादू है। फिर पढ़ाई छोड़ देते हैं; इसलिए बाप कहते हैं आदि सनातन देवी–देवता धर्म वालों को पकड़ना चाहिए। आदि सनातन देवी–देवता धर्म ही है। तुम समझाते हो इन ल.ना. ने यह पद कैसे पाया। मनुष्य से देवता कैस बने। ज़रूर अन्तिम जन्म होगा। 84 जन्म पूरा कर यह बने हैं। जिनको सर्विस का शौक है वह इसी में ही लगे रहते हैं। और सभी तरफ से मोह आदि टूट जाता है। हम इन आँखों से जो कुछ देखते हैं उनको भूल जाना है। जैसे कि देखते ही नहीं। सी नो इविल, हियर नो इविल। तुम भी बन्दर थे ना। जैसे वाममार्ग में गिरने वाले देवताओं के चित्र दे दिये हैं। वैसे यह बन्दर मिसल बन(ने) हैं तो बन्दरों का ही चित्र बना दिया है। समझते कुछ भी नहीं। कोई भी नहीं जो सृष्टि के रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत को जानता हो; इसलिए बाबा को कहां बाहर जाने दिल नहीं होती। बच्चों को आफरीन देता हूं, जो समझाकर लायक बनाते हैं। प्राइज़ भी इन्हों को मिलती है तो काम करके दिखाते हैं। तुम जानते हो बाबा हमको कितनी प्राइज़ देंगे। पहला नम्बर है सूर्यवंशी राजधानी की प्राईज़। सेकण्ड नम्बर है चन्द्रवंशी की प्राइज़। नम्बरवार तो होते हैं ना। बाबा नाम नहीं बतलाते हैं। ऐसी–2 उल्टी बातें सुनाते हैं फिर उनको मना करते हैं किसको सुनाना नहीं। बहुत बातें बना कर सुनाते हैं शैतानी की। व्यास के लिए भी कहते हैं ना गीता भगवद, रामायण आदि क्या रचा है। वण्डर (कै)सी–2 बातें बैठ बनाई हैं। झूठ तो मिरई झूठ..... ग्लानी के शास्त्र पढ़ते–2 तुम नीचे ही गिरते आये हो। बाप समझाते हैं भक्तिमार्ग के शास्त्र, दान–पुण्य आदि करने से मेरे साथ कोई नहीं मिलता। रसातल ही चले जाते हैं। पढ़ते–2 दुर्गति को पा लिया है। कितना धन इकट्ठा करते हैं। साहूकार बन गये हैं। बाप कहते हैं पापात्माएं बनते जाते हैं। पुण्यात्मा.. कोई बन न सके। बाप ही आकर पुण्यात्मा बनाते हैं। एक है हद का दान–पुण्य, दूसरा है बेहद का। भक्तिमार्ग में इनडायरैक्ट ईश्वर अर्थ दान करते हैं; परन्तु ईश्वर किसको कहा जाता है यह जानते नहीं। अभी तुम जानते हो। तुम कहते हो शिवबाबा ही हमको क्या–2 से क्या बनाते हैं। भगवान तो एक ही है। उनको फिर सर्वव्यापी कह दिया है। तो उनको समझाना चाहिए ना। यह तुम लोगों ने क्या किया है। तुम्हारे पास आते भी हैं, थोड़ा सुन कर बाहर गये और खलास। यहां की यहां रही। सब भूल जाते हैं। तुमको कहते हैं बहुत अच्छा है। हम फिर आवेंगे; परन्तु माया कहती है हम तो तुमको नाक से पकड़ गटर में गिरा देंगे। मोह की रग़ टूटती ही नहीं है। मोहजीत राजा की कथा कितनी अच्छी है। मोहजीत राजाएं फर्स्ट क्लास यह (ल.ना.) हैं ना; परन्तु समझते नहीं हैं। जैसे कि जट हैं। बाप कहते हैं माया कैसे मिट्टी में मिला देती है। वण्डर है, रावण राज्य में सीढ़ी उतरते–2 एकदम मट्टी में भर जाते हैं। बच्चों का खेल

होता है ना। ऊपर जाकर फिर धूं नीचे आकर गिरते हैं। तुम्हारा भी खेल बहुत सहज है। तो बाप कहते हैं अच्छी रीत समझो और धारण करो। कोई भी छी–2 काम न करो। बहुत उल्टी–सुल्टी बातें सुनाते हैं। व्यास ने कितनी झूठी शास्त्र बैठ बनाई है और फिर कहते हैं व्यास भगवानुवाच। अभी भगवान तो शास्त्र लिखते नहीं। बाप कहते हैं मैं तो पढ़ता भी नहीं हूं। मैं तो बीजरूप, सत–चित, चैतन्य हूं। ज्ञान का सागर हूं। अभी ज्ञान का सागर ऊपर बैठ जावेगा क्या? ज़रूर कभी भी आकर ज्ञान दिया होगा ना। ज्ञान क्या चीज़ है यह भी किसको पता नहीं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको पढ़ाने आता हूं तो रेग्युलर पढ़ना चाहिए ना। एक दिन भी पढ़ाई मिस न करनी चाहिए। कोई–2 प्वाइन्ट ज़रूर अच्छी मिलेगी। मुरली न पढ़ेंगे तो प्वाइन्ट मिस हो जावेगी। अथाह प्वाइन्ट्स हैं। यह भी तुमको समझाना है तुम भारतवासी आदि सनातन देवी–देवता धर्म के थे। एक ही धर्म था। अभी तो कितने ढेर धर्म हैं। फिर हिस्ट्री मस्ट रिपीट। यह चढ़ने और उतरने का सीढ़ी है। जैसे जिन को हुकुम दिया सीढ़ी उतरो और चढ़ो। तुम सभी जिन हो। 84 की सीढ़ी उतरते हो और चढ़ते हो। कितने ढेर मनुष्य हैं। हरेक को कितना पार्ट बजाना होता है। बच्चों को तो बड़ा वण्डर लगना चाहिए। तुमको बेहद की नाटक की पूरी पहचान मिली है। सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को तुम जानते हो। कोई भी मनुष्य कुत्ता, बिल्ला जनावर आदि नहीं बनते। सतयुग में ऐसी कोई भी कुवचन नहीं निकलते हैं। यहां तो कितनी गाली देते रहते हैं। यह है विषय वैतरणी नदी। रौरव नर्क। मनुष्य सभी रौरव नर्क में पड़े हैं नम्बरवार। अच्छी बच्ची कोई देखी यह भगाया। बड़े–2 आदमी भी भगवाते रहते हैं और फिर दोष रख दिया है कृष्ण पर कि इतनी रानियां थीं। उनको भगाया, यह किया। एकदम पा(द)र उठाकर मुँह में डाले यह क्या तुम कृष्ण के लिए ऐसा कहते हो; परन्तु यहां यथा राजा–रानी तथा प्रजा है। तुम किस पर केस करेंगे? तुम्हारी विजय होनी ही है पिछाड़ी में। जब समझेंगे आदि सनातन देवी–देवता धर्म किसने स्थापन किया। यह ही पहले नम्बर की मुख्य बात है। जो कोई भी नहीं जानते। गीता में नाम बदल दिया है। कोई होशियार वकील निकले जो और अच्छी रीत समझे और केस करे। नामी–ग्रामी चीफ–जस्टिस समझे तब बात है। बाप तो कहते हैं मैं तो हूं ही ग़रीब निवाज़। यह पिछाड़ी को समझेंगे टू लेट हो जाते हैं। अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। स्वीट घर और स्वीट राजाई बुद्धि में याद है। बाप कहते हैं अभी शान्तिधाम और सुखधाम जाना है। तुमने जो पार्ट बजाया अभी बुद्धि में तो है। और सभी मरे पड़े हैं सिवाय ब्राह्मणों के। ब्राह्मण ही खड़े हो जावेंगे। ब्राह्मण सो फिर देवता बनते हैं। यह ... धर्म स्थापन हो रहा है। और धर्म कैसे स्थापन होती(ते) हैं वह भी बुद्धि में है। क्राइस्ट एक आया। उस समय क्रिश्चियन तो होंगे नहीं।..... का गुरू बनना होता है क्या? ऐसे भी नहीं बाईबल कोई सद्गति का पुस्तक है। कुछ भी नहीं। क्राइस्ट की महिमा क्या लिख सकते हैं? सीढ़ी उतरते–2 दुर्गति में ही जाते हैं। वह क्या समझावेंगे? समझाने वाला तो एक ही बाप है। ऐसे बाप को भी तुम फिर घड़ी–2 भूल जाते हो। बाप कहते हैं मुझे याद करो। धंधा आदि भी करो। सिर्फ़ पवित्र बनो। आदि सनातन देवी–देवता धर्म पवित्र था। अभी फिर पवित्र बनना है। चलते–फिरते मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। सिवाय याद की यात्रा तुम ऊँच पद कदाचित पा न सकेंगे। जब सतोप्रधान तक पहुँचेंगे तब ही पाप कटेंगे। यह है योग अग्नि। यह अक्षर भी गीता के हैं। योग–2 कह कितना माथा मारते हैं। विलायत से भी फंसाकर उन्हों को ले आते हैं योग सिखलाने लिए। अभी जब तुम्हारी बात समझे। परमात्मा सुप्रीमसोल तो एक ही है। वही आकर ना सुप्रीम को सुप्रीम बनाते हैं। बाकी तो सभी हैं हठयोगी। प्राचीन योग है नहीं। सन्यासी कोई शुरू से थोड़े ही आये हैं। राजयोग से तो देवता बने। जो लास्ट वही फर्स्ट बनते हैं। हठयोगी तो कब राजयोग सिखला नहीं सकते। एक दिन अखबार वाले भी डालेंगे यह तो बरोबर राजयोग है। सिवाय एक परमपिता–परमात्मा के कोई सिखाये न सके। ऐसी–2 बातें बड़े–2 अक्षरों में डालनी चाहिए। खर्चा का हर्जा नहीं। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।